# चाणक्य नीति दर्पण

आचार्य चाणक्य · 1905 खेमराज प्रति

## अध्याय 2: मित्र-शत्रु और बुद्धि-संरक्षण

VastuGuruji · vastuguruji.in

# अध्याय 2

मित्र-शत्रु और बुद्धि-संरक्षण · 20 श्लोक

### श्लोक 1

अनृतं साहसं माया मूर्खत्वमतिलोभिता।
अशौचत्वं निर्दयत्वं स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः॥

*[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] — [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible]।*

**अर्थ**

आचार्य चाणक्य द्वितीय अध्याय का आरम्भ एक तीखे सामाजिक observation से करते हैं। यह श्लोक प्राचीन समाज की पुरुष-केन्द्रित दृष्टि से लिखा गया है — आज इसे "स्त्रियों के दोष" के रूप में पढ़ने के बजाय **मानव-**

**मन के सात स्वाभाविक दोष** के रूप में समझना चाहिए, जो लिंग-निरपेक्ष हैं।

सात दोष : (1) [illegible] — सच्चाई से बचना, (2) [illegible] — बिना विचार के जोखिम लेना, (3) [illegible] — छल या pretence, (4) [illegible] — बुद्धि का अभाव, (5) [illegible] — अधिक की लालच, (6) [illegible] — शरीर और मन की अशुद्धि, (7) [illegible] — करुणा का अभाव।

चाणक्य कह रहे हैं कि ये दोष **"स्वभावजाः"** हैं — सीखने से नहीं आते, बल्कि मनुष्य की प्रकृति में निहित हैं। अर्थात् इन्हें मिटाना नहीं, इन पर निरन्तर विजय पाना ही साधना है। यह बौद्ध, जैन और सांख्य दर्शन के "क्लेश" (kleshas) से मिलता है।

मगध साम्राज्य में जब चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य की मन्त्रि-परिषद् बनायी, तब उन्होंने हर मन्त्री की **"सप्त-दोष परीक्षा"** ली थी — गुप्त धन का प्रलोभन, स्त्री का आकर्षण, शत्रु का भय आदि से उनकी प्रतिक्रिया देखी गयी। जो सातों दोषों पर नियंत्रण रखता था, वही "अमात्य" बनाया गया।

आधुनिक leadership theory भी यही कहती है — एक नेता की असली परीक्षा अनुकूल परिस्थितियों में नहीं, बल्कि उन सात triggering scenarios में होती है जहाँ सत्य से बचना, अति-साहस करना, छल करना आसान होता है।

### [illegible] आधुनिक उदाहरण

एक corporate CEO के पास तीन साल में चार बार ऐसे क्षण आए — (1) एक quarter के नुक़सान को छिपाने का दबाव (अनृत), (2) एक हड़बड़ी में किया गया acquisition (अति-साहस), (3) competitor के एक executive को गुप्त रूप से hire करना (माया), (4) एक junior के idea को अपना बताना (अशौचत्व)। जिस CEO ने इन चारों क्षणों में स्वयं को रोका — दस साल बाद वही industry का सबसे सम्मानित नाम बना। चाणक्य का यह श्लोक उसी self-restraint का blueprint है।

### [illegible] मस्तिष्क-दर्शन

Cognitive neuroscience में इन सात दोषों का स्रोत **limbic system** है — विशेषकर amygdala (भय, क्रोध), nucleus accumbens (लोभ, पुरस्कार-तृष्णा) और anterior cingulate cortex (असत्य की permission)। ये सब evolutionary रूप से 200 मिलियन वर्ष पुराने हैं। इन पर control करता है **prefrontal cortex** — जो केवल 200,000 वर्ष पुराना है। चाणक्य का "स्वभावजाः" शब्द neuroanatomy से बिल्कुल सटीक है — limbic दोष "जन्म से" हैं, prefrontal अनुशासन "अभ्यास से।"

## 2श्लोक 2

भोज्यं भोजनशक्तिश्च रतिशक्तिर्वराङ्गना।

विभवो दानशक्तिश्च नाल्पस्य तपसः फलम्॥

> *[illegible] — [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]-[illegible], [illegible] [illegible]-[illegible] — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।*

**अर्थ**

चाणक्य यहाँ संसार के छह सबसे प्रत्यक्ष सुखों की सूची बनाते हैं और एक चौंका देने वाला निष्कर्ष देते हैं — ये "नाल्पस्य तपसः फलम्" अर्थात् किसी छोटी साधना का परिणाम नहीं। ये "महातप" का फल हैं।

छह सुख : (1) *[illegible]* — उत्तम भोजन उपलब्ध होना, (2) *[illegible]* — उसे पचाने की क्षमता, (3) *[illegible]* — रति का सामर्थ्य, (4) *[illegible]* — योग्य साथी, (5) *[illegible]* — ऐश्वर्य, (6) *[illegible]* — देने की क्षमता।

गहराई से देखें — चाणक्य "भोजन" और "भोजनशक्ति" को अलग रखते हैं। यह केवल कविता नहीं, गहरा observation है। बहुत लोग भोज्य पाते हैं पर पचा नहीं पाते (अल्सर, मधुमेह, अरुचि)। बहुत लोग ऐश्वर्य पाते हैं पर "दानशक्ति" नहीं पा पाते — कंजूसी से ग्रसित रहते हैं। अर्थात् केवल "होना" काफ़ी नहीं, उसे **"भोगने की क्षमता"** भी पुण्य से मिलती है।

यह नीति आज की "abundance vs enjoyment gap" को समझाती है। एक अरबपति जो stress में सो नहीं पाता, उसके पास "विभव" है पर "विभव भोगने की शक्ति" नहीं। एक स्वस्थ साधारण आदमी जो दिन में दो रोटी हँसकर खाता है — उसके पास "भोजनशक्ति" है, जो धनी को नहीं मिली।

"दानशक्ति" विशेष महत्वपूर्ण है। चाणक्य के अनुसार, संसार में सबसे कठिन क्षमता है — पाया हुआ धन त्यागने की क्षमता। यह केवल योगी को मिलती है। और यही चित्त-शुद्धि का सर्वोच्च चिह्न है।

**[illegible] आधुनिक उदाहरण**

Bill Gates ने Microsoft से $100 billion+ कमाए — पर असली परीक्षा तब हुई जब उन्होंने Gates Foundation के माध्यम से $60 billion दान कर दिया। यह **"दानशक्ति"** है। उनके मुक़ाबले अनेक रूसी oligarchs समान धन रखते हैं पर एक dollar भी नहीं छोड़ पाते। चाणक्य कहते — पहले को महातप का फल मिला, दूसरे को केवल "विभव" मिला। दोनों में अन्तर — "भोगने और देने की क्षमता।"

**[illegible] मस्तिष्क-दर्शन**

Neuroscience में **dopaminergic reward system** "पाने" का सुख देता है, और एक अलग system — **oxytocin + vagal tone** — "देने" का सुख देता है। दोनों अलग neurochemistry हैं! अधिकांश लोग पहले में फँसे रहते हैं — receive ≠ enjoy। Hedonic adaptation के कारण नया iPhone, बड़ा घर, सब 3 महीने में सामान्य लगने लगते हैं। "दानशक्ति" oxytocin pathway को सक्रिय करती है — जो स्थायी (sustained) wellbeing देती है। यही चाणक्य के "तपः फलम्" का neurochemical आधार है।

## श्लोक 3

यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्या छन्दानुगामिनी।
विभवे यश्च सन्तुष्टः तस्य स्वर्ग इहैव हि॥

> [illegible], [illegible] — [illegible]।

### अर्थ

चाणक्य "स्वर्ग" की परिभाषा बदलते हैं। शास्त्र कहते हैं स्वर्ग मरने के बाद इन्द्रलोक में मिलेगा। पर चाणक्य व्यवहारवादी हैं — वे कहते हैं असली स्वर्ग जीते-जी इन तीन में निहित है।

तीन घटक : (1) [illegible] — आज्ञाकारी सन्तान, (2) [illegible] — पत्नी जो साथ चले, परन्तु अन्धी अनुयायी नहीं — "छन्द" अर्थात् लय में चलने वाली, (3) [illegible] — जो उपलब्ध है उसमें तृप्त।

"छन्दानुगामिनी" का अनुवाद आज सावधानी से करना होगा। चाणक्य के युग में इसका अर्थ था "गृहस्थाश्रम के साझा लय में चलने वाला साथी।" यह दासी नहीं, partner है। दोनों एक-दूसरे के लय में हों — पति पत्नी के साथ, पत्नी पति के साथ। यह "compatibility" का प्राचीन शब्द है।

"विभवे सन्तुष्ट" तीसरा सबसे कठिन है। अधिकांश दुख की जड़ "और चाहिए" है। चाणक्य का stoic दर्शन कहता है — सन्तोष कोई "मिलने" से नहीं आता, "रुकने" से आता है। जब आप कहना सीख जाएँ "यह पर्याप्त है," तब आपका स्वर्ग शुरू होता है।

मगध दरबार में चाणक्य ने स्वयं इसका example दिया — साम्राज्य के सर्वोच्च मन्त्री होते हुए वे एक कुटिया में रहे। चन्द्रगुप्त ने महल बनवाने का प्रस्ताव दिया, उन्होंने अस्वीकार किया। "स्वर्ग" कुटिया में था, महल में नहीं।

### [illegible] आधुनिक उदाहरण

रायपुर के एक मध्यवर्गीय शिक्षक रामेश्वर के पास एक small flat, एक scooter और साधारण वेतन है। पर उनके बेटे ने NEET निकाला, पत्नी 25 साल से उनके साथ harmony में चली, और स्वयं वे रोज़ शाम बरामदे में चाय पीते हुए संतुष्ट दिखते हैं। पड़ोस के एक businessman के पास crore की दौलत है पर बेटा drugs में, पत्नी से तलाक, खुद अनिद्रा। दोनों में से चाणक्य के अनुसार "स्वर्गवासी" कौन है — स्पष्ट है।

### [illegible] मस्तिष्क-दर्शन

Harvard की 85-वर्षीय Grant Study (मानव सुख पर सबसे लम्बा शोध) ने यही निष्कर्ष दिया — happiness का

सबसे बड़ा predictor है **quality of relationships**, धन नहीं। चाणक्य के तीन तत्व — पुत्र, पत्नी, सन्तोष — Robert Waldinger के "good relationships + acceptance" से ठीक मेल खाते हैं। Neurologically, सुरक्षित attachment relationships **vagal tone** को बेहतर करते हैं — जो parasympathetic regulation, immunity और दीर्घायु से जुड़ा है। चाणक्य का "स्वर्ग इहैव" — biological रूप से एक measurable state है।

### 4श्लोक 4

ते पुत्रा ये पितुर्भक्ताः स पिता यस्तु पोषकः।
तन्मित्रं यत्र विश्वासः सा भार्या यत्र निर्वृतिः॥

> *[illegible] — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]।*

**अर्थ**

यह श्लोक चाणक्य की **"functional definition"** है — उन्होंने हर रिश्ते को उसके कार्य से परिभाषित किया, न कि biological label से।

चार परिभाषाएँ : (1) *[illegible]* वही जो पिता-भक्त हो, (2) *[illegible]* वही जो पोषण करे, (3) *[illegible]* वही जिस पर विश्वास हो, (4) *[illegible]* वही जिसके साथ निर्वृति (शान्ति, सुख) मिले।

यह दर्शन क्रांतिकारी है। यदि कोई biological पुत्र पिता को नहीं पूछता — चाणक्य के अनुसार वह "पुत्र" नहीं है। यदि कोई biological पिता पालन नहीं करता — वह "पिता" नहीं है। यदि "मित्र" विश्वासघात करे — वह मित्र नहीं था। यदि पत्नी से शान्ति न मिले — वह "भार्या" नहीं है।

आचार्य यह सिखा रहे हैं कि **नाम-मात्र से सम्बन्ध नहीं चलते, कर्म से चलते हैं।** रक्त का रिश्ता बिना भाव के व्यर्थ है। और बिना रक्त का रिश्ता भाव से अमूल्य हो जाता है।

"निर्वृति" शब्द विशेष है — इसका अर्थ केवल "सुख" नहीं, बल्कि "इच्छाओं का शान्त होना" है। अर्थात् वह पत्नी जो आपके मन को restless से calm बना दे — वही असली भार्या है। यह केवल रूप या सेवा से नहीं होता, गहरी emotional attunement से होता है।

राजनीतिक संदर्भ में — चाणक्य ने इस सूत्र का प्रयोग करके धननन्द को त्यागा (वह "पोषक राजा" नहीं था) और चन्द्रगुप्त को अपनाया (वह विश्वसनीय शिष्य था)। यह सूत्र personal से political तक हर रिश्ते पर लागू होता है।

**[illegible] आधुनिक उदाहरण**

Mumbai की Sushma जी के पास तीन बेटे हैं — सबसे बड़ा बेटा NRI है, माह में फ़ोन करता है पर पिछले 8 साल में घर नहीं आया। बीच का बेटा अपनी मम्मी के साथ रहता है पर हर बात पर चिढ़ता है। सबसे छोटा बेटा पास के शहर में clerk है, हर शनिवार माँ से मिलने आता है, उसकी दवा का ख़्याल रखता है। चाणक्य के अनुसार "ते पुत्रा" — असली पुत्र — केवल तीसरा है। बाकी दो biological हैं पर भाव-शून्य।

### 🧠 मस्तिष्क-दर्शन

**Attachment theory** (John Bowlby, Mary Ainsworth) यही कहती है — रिश्ते की quality biological connection से नहीं, **responsive caregiving patterns** से बनती है। एक adopting parent जो attuned है, biological parent से बेहतर "पिता" है। Brain में **mirror neurons** और **theory of mind** circuits उन्हीं रिश्तों में मज़बूत होते हैं जहाँ निरन्तर भावनात्मक feedback मिलता है। "निर्वृति" वाली पत्नी — biologically कहें तो co-regulation देने वाली partner — दीर्घायु, हृदय-स्वास्थ्य और मानसिक स्थिरता तीनों बढ़ाती है।

## 5श्लोक 5

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्॥

> [illegible]

### अर्थ

यह चाणक्य के सबसे प्रसिद्ध श्लोकों में से एक है — "विषकुम्भं पयोमुखम्" (मुख पर दूध, भीतर विष का घड़ा)। यह उपमा literature में 2300 साल से जीवित है।

दो लक्षण : (1) [illegible] — आपकी अनुपस्थिति में आपके कार्य को नष्ट करता है, (2) [illegible] — आपके सामने मीठा बोलता है।

यह आधुनिक corporate world में सबसे बड़ी विडम्बना है — आपका सबसे ख़तरनाक शत्रु आपका "best friend" बन कर बैठा होता है। उसकी मुस्कान आपको शान्त रखती है, और उसकी पीठ-पीछे की चालाकी आपको बर्बाद करती है।

चाणक्य कहते हैं — ऐसे को "वर्जयेत्" — पूरी तरह त्याग दो। न उसकी मीठी बात पर भरोसा करो, न उसकी संगति में रहो। क्योंकि वह दूध का घड़ा दिखता है, पर भीतर हलाहल विष है — जब आप पीने जाएँगे, मरना तय है।

इस पहचान का तरीक़ा क्या है ? चाणक्य ने अन्यत्र कहा है — "उसका **परोक्ष व्यवहार** देखो।" जब वह आपकी अनुपस्थिति में आपकी बात कैसे करता है, आपके निर्णयों का कैसा वर्णन करता है, आपके सम्बन्धों में किस तरह दूरी डालता है — यही असली कसौटी है।

राजनीतिक संदर्भ में — चाणक्य ने धननन्द की मन्त्रि-परिषद् में अनेक "विषकुम्भ-पयोमुख" मन्त्रियों को पहचाना और उन्हें एक-एक करके चन्द्रगुप्त के विरुद्ध-षडयन्त्र में फँसाया। यह सूत्र केवल मित्रता नहीं, राज्य-नीति का भी है।

### ? आधुनिक उदाहरण

एक IT company में Suresh को promote होने वाला था। उसका सहकर्मी Vikas रोज़ उसके साथ lunch करता, "yaar, you deserve it" कहता। पर HR meetings में Vikas ने quietly Suresh के तीन past mistakes को CEO तक पहुँचा दिया। Promotion रुकी, Suresh को महीनों बाद पता चला। यह "विषकुम्भं पयोमुखम्" है। पहचान का सिर्फ़ एक तरीक़ा — Vikas पीछे से कैसा बोलता है? Suresh ने यह कभी जाँचा नहीं।

### ? मस्तिष्क-दर्शन

Psychology में इसे **covert aggression** या **Machiavellian personality** कहते हैं — Dark Triad का एक हिस्सा। ऐसे लोग **cognitive empathy** (दूसरे को समझना) में निपुण होते हैं पर **affective empathy** (दूसरे के लिए महसूस करना) में शून्य। उनका prefrontal cortex active है पर anterior insula नहीं। पहचान का neuroscience-tested तरीक़ा — **"behavioral consistency"** देखें। क्या वे आपके बारे में दूसरों से वही कहते हैं जो आपके सामने कहते हैं ? यदि नहीं — चाणक्य का "वर्जयेत्" आपके मस्तिष्क के survival circuit का सही जवाब है।

## 6श्लोक 6

न विश्वसेत्कुमित्रे च मित्रे चापि न विश्वसेत्।
कदाचित्कुपितं मित्रं सर्वगुह्यं प्रकाशयेत्॥

> ? [illegible] — [illegible]।

### अर्थ

यह श्लोक चाणक्य की एक चौंका देने वाली नीति है — "अच्छे मित्र पर भी अति विश्वास मत करो।" यह cynicism नहीं, बल्कि गहरी मानवीय समझ है।

चाणक्य का तर्क — कोई भी मित्र, चाहे वह कितना भी अच्छा हो, क्रोध की एक स्थिति आ सकती है जहाँ वह

आपके सब रहस्य प्रकट कर दे। मित्रता एक भावनात्मक relationship है — और भावनाएँ चंचल हैं। आज जो आपका सबसे प्रिय है, कल किसी विवाद में आपका सबसे बड़ा निंदक बन सकता है।

"कदाचित्" शब्द महत्वपूर्ण है — "कभी-कभी।" चाणक्य यह नहीं कह रहे कि हर मित्र विश्वासघाती है। वे कह रहे हैं कि एक भी ऐसा क्षण आ सकता है, और उस क्षण में जो रहस्य आपने उसे दिया था, वह सार्वजनिक हो जाएगा।

यह सूत्र **"information compartmentalization"** का प्राचीन उद्घोष है। आधुनिक intelligence agencies (CIA, RAW) इसी सिद्धान्त पर काम करती हैं — "need to know basis।" कोई भी एक व्यक्ति सब कुछ नहीं जानता।

व्यवहारिक अर्थ — हर रिश्ते में एक अधिकतम "trust depth" होती है। पारिवारिक, व्यापारिक, राजनीतिक, हृदय-सम्बन्धी — हर category के लिए अलग-अलग रहस्य share करें। एक ही पात्र में सब डाल देना मूर्खता है।

मगध दरबार में चाणक्य ने इसका pure form देखा — उन्होंने चन्द्रगुप्त को भी सब गुप्त रणनीतियाँ नहीं बतायीं। अनेक उपायों को केवल अपने मन में रखा। यह "trust + boundary" का प्राचीन balance है।

### ? आधुनिक उदाहरण

एक startup founder ने अपने co-founder से सब financial details, investor talks और exit plans share किये — "वह तो मेरा सबसे पुराना मित्र है।" तीन साल बाद equity dispute में co-founder ने वही सब details lawyers और competitor को दे दीं। Lawsuit में founder को 40% equity खोनी पड़ी। यदि "trust depth" को compartmentalize किया होता — कुछ बातें केवल lawyer से, कुछ केवल mentor से — यह स्थिति कभी न आती।

### ? मस्तिष्क-दर्शन

**Affective forecasting** research (Daniel Gilbert) ने सिद्ध किया है कि लोग अपनी भविष्य की भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ गलत predict करते हैं। आज जो मित्र शान्त है, कल वह क्रोधित हो सकता है — और उस क्रोध में उसका **amygdala-hijacked state** उसके prefrontal cortex को बायपास कर देगा। उस क्षण आपके रहस्य "social weapon" बन जाते हैं। चाणक्य का "कदाचित् कुपित" — neurologically, यह amygdala flooding की पहचान है। उस state में मनुष्य अपने सबसे पुराने मित्र का भी सर्वोच्च विश्वास भी तोड़ सकता है।

## श्लोक 7

मनसा चिन्तितं कार्यं वाचा नैव प्रकाशयेत्।

मन्त्रेण रक्षयेद् गूढं कार्ये चापि नियोजयेत्॥

> [illegible] — [illegible]

**अर्थ**

यह श्लोक चाणक्य की **"silent execution"** नीति है — आधुनिक entrepreneurship और war strategy दोनों में अमूल्य।

तीन निर्देश : (1) मन में सोचा हुआ *"[illegible]"* — वाणी से प्रकट न करें, (2) उसे *"[illegible]"* — गुप्त मन्त्र की तरह सुरक्षित रखें, (3) *"[illegible]"* — और गुप्त रूप से ही कार्यान्वित करें।

क्यों ? चाणक्य का तर्क — जब आप अपनी योजना declare कर देते हैं, तीन हानियाँ होती हैं: (a) शत्रु को alert मिल जाता है, (b) शुभचिन्तकों के बीच भी ईर्ष्या जागती है, (c) यदि योजना विफल हो जाए, तो आपका सार्वजनिक अपमान होता है।

"मन्त्र" शब्द विशेष है। मन्त्र को secrecy में रखने का शास्त्रीय नियम है — गुरु शिष्य को कान में देते हैं, बार-बार दोहराते नहीं। यदि मन्त्र सार्वजनिक हो जाए, उसकी "शक्ति" समाप्त। चाणक्य कह रहे हैं — आपकी योजना भी "मन्त्र" है। उसकी शक्ति secrecy में निहित है।

आधुनिक उदाहरण — Apple ने iPhone को 5 साल तक गुप्त रखा। Microsoft का "Project Natal" (Kinect) भी वर्षों तक leak नहीं हुआ। बड़े-बड़े military operations (Operation Neptune Spear, जिसमें Osama bin Laden मारा गया) tabletop secrecy पर बने।

चाणक्य ने स्वयं चन्द्रगुप्त के lिए राजगद्दी की योजना 10 वर्षों तक गुप्त रखी थी। केवल अंतिम क्षण में उन्होंने अपने pieces चलाये। यह श्लोक उनकी अपनी राजनीतिक सफलता का blueprint है।

**[illegible] आधुनिक उदाहरण**

एक उद्यमी ने अपना नया business idea social media पर post कर दिया — "I am launching X in 6 months." तीन महीने में दो competitors ने वही idea पकड़ कर faster execute कर लिया। उद्यमी का market window बन्द। उसी समय एक दूसरे founder ने अपना idea किसी को नहीं बताया, 18 महीने quiet build किया, और एक ही दिन में launch + funding दोनों announce किया। दूसरा सफल, पहला विफल। दोनों में अन्तर — केवल "secrecy of intent।"

**[illegible] मस्तिष्क-दर्शन**

Cognitive science में **"social reality effect"** है — जब आप किसी goal को सार्वजनिक रूप से announce करते हैं, आपके brain का reward system उसे "achieved" मानकर dopamine release करता है। फिर execute

करने की urgency गिर जाती है (NYU Peter Gollwitzer का शोध)। उल्टी ओर, जो goal आप silently pursue करते हैं — उसके लिए dopamine केवल actual completion पर मिलता है। यह "execution motivation" को high रखता है। चाणक्य का "मन्त्रेण रक्षयेद्" — आपके brain को goal-completion के लिए biologically primed रखता है।

### श्लोक 8

कथं चखलु मूर्खत्वं कथं चखलु यौवनम्।
कथात्कष्टतरं चैव परगेहनिवासनम्॥

> [illegible]

**अर्थ**

यह श्लोक तीन कष्टों की hierarchy बनाता है — और चौंकाने वाला निष्कर्ष देता है कि सबसे बड़ा कष्ट "परगेहनिवास" है।

तीन कष्ट : (1) [illegible] — मूर्खता, बुद्धि का अभाव। यह सबको दुख देता है क्योंकि मूर्ख न तो दूसरों को समझता है, न दूसरे उसे समझते हैं। (2) [illegible] — जवानी। यह दुख क्यों ? क्योंकि युवापन में शरीर तो सक्षम है पर अनुभव और संयम नहीं। इच्छाएँ अधिक, साधन कम — यह असन्तुलन ही दुख है। (3) [illegible] — पराये घर का वास।

चाणक्य कह रहे हैं तीसरा सर्वोच्च कष्ट है। क्यों ? क्योंकि अपने घर में आप मूर्ख भी हों, युवा भी हों — फिर भी आपकी स्वतन्त्रता है। पराये घर में — चाहे आप विद्वान हों, अनुभवी हों — आप अधीन हैं। हर pas, हर मुस्कान, हर निर्णय किसी और के अनुमोदन पर निर्भर है।

यह "स्वतन्त्रता" का बहुत गहरा सूत्र है। चाणक्य के अनुसार, मनुष्य की core need भोजन-वस्त्र नहीं — **"स्व-गृह"** है। अपना स्थान, अपनी मर्यादा, अपनी आज्ञा। इन तीनों के बिना मनुष्य चाहे जितना समृद्ध हो, भीतर से टूटता है।

आधुनिक संदर्भ — एक tenant जो किराये के घर में 20 साल रहा है, एक daughter-in-law जो ससुराल में रहती है, एक immigrant जो विदेश में employed है, एक employee जो company के guest house में रहता है — सभी "परगेहनिवासी" हैं। उनका दुख external नहीं, structural है।

चाणक्य की सलाह implicit है — चाहे छोटा हो, चाहे सरल हो, अपना घर बनाओ। स्वतन्त्रता ही असली सुख

है।

### ▯ आधुनिक उदाहरण

Bangalore में एक senior architect रोहन को दो career options मिले — (1) ₹40 lakh package पर US में employer-provided housing, (2) ₹22 lakh package पर अपने रायपुर में अपना घर बनाने का loan। उसने पहला चुना। दो साल में US में depression। तीसरे साल वापस आया, छोटा घर बनाया, ₹22 lakh job में सुखी। उसने स्वयं स्वीकार किया — "पैसा अधिक था पर मैं वहाँ मेहमान था। यहाँ कम है पर मैं मालिक हूँ।" चाणक्य का "परगेहनिवास" का बोध।

### ▯ मस्तिष्क-दर्शन

**Self-Determination Theory** (Deci & Ryan) के अनुसार मनुष्य की तीन core needs हैं — **autonomy** (स्वायत्तता), **competence** (योग्यता), **relatedness** (सम्बन्ध)। "परगेहनिवास" autonomy को नष्ट करता है। Neurologically, autonomy की कमी **cortisol** (तनाव-हार्मोन) को chronic रूप से ऊँचा रखती है — जो depression, immunity-loss, और premature aging का कारण है। चाणक्य का "कष्टतरम्" — biological रूप से measurable तनाव-स्थिति है, केवल भावनात्मक नहीं।

## 9श्लोक 9

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने॥

> ▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯, ▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯▯, ▯▯ ▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯ — ▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯।

### अर्थ

यह श्लोक चाणक्य की सुप्रसिद्ध काव्यात्मक चौकड़ी है — चार प्रकृति की दुर्लभताओं को एक मानवीय दुर्लभता से जोड़कर साधुओं की महिमा दिखाते हैं।

चार उपमाएँ : (1) ▯▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯ — हर पर्वत में माणिक नहीं मिलता। माणिक vishesh geological condition में बनता है — लाखों वर्ष की heat, pressure और सही mineral mix से। यह दुर्लभ है। (2) ▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯ ▯▯▯ ▯▯▯ — हर हाथी के मस्तक में मोती नहीं — यह तत्कालीन काव्य-कल्पना थी कि कुछ "गजमुक्ता" हाथियों के सिर में पाये जाते हैं। (3) ▯▯▯▯▯▯ ▯ ▯▯▯ ▯▯▯ — हर वन में चन्दन नहीं — चन्दन केवल मलयाचल और कुछ चुनिंदा क्षेत्रों में होता है। (4) ▯▯▯▯▯ ▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯ — वैसे ही सच्चे साधु पुरुष भी सर्वत्र नहीं।

आचार्य का गहरा सन्देश — **"दुर्लभता"** ही महिमा का चिह्न है। यदि हर पत्थर माणिक होता, माणिक का मूल्य नहीं रहता। यदि हर पर्वत में माणिक मिलता, उसकी खोज की कथा न होती। वैसे ही, यदि हर जगह सच्चे साधु पुरुष होते, उनकी संगति का गौरव नहीं होता।

व्यवहारिक अर्थ — जब आपको कोई सच्चा गुरु, सच्चा मित्र, सच्चा सलाहकार मिले — समझ लें कि वह "माणिक" है, "चन्दन" है। उसे सहेज कर रखें। यह सर्वत्र नहीं मिलेगा।

चाणक्य ने यही experience दिखाया — उन्हें पाटलिपुत्र की पूरी विद्वत्-सभा में चन्द्रगुप्त मिला। एक ही। बाकी सब "सामान्य पर्वत" थे।

### ⍰ आधुनिक उदाहरण

एक IIT के बैच में 500 students थे। 20 साल बाद देखा गया कि उनमें से केवल 4-5 ही वास्तव में "साधु" बने — जिन्होंने अपना technical knowledge समाज के हित में लगाया (Pranav Mistry, Sridhar Vembu आदि)। बाकी 495 normal corporate जीवन में चले गए। बैच के "साधु" दुर्लभ थे — "साधवो न हि सर्वत्र।" यदि उन 5 में से कोई आपका mentor मिल जाए — तो उन्हें छोड़ना मूर्खता है।

### ⍰ मस्तिष्क-दर्शन

Statistics में इसे **"power law distribution"** कहते हैं — जहाँ 80% value 20% sources से आती है (Pareto principle)। मानवीय गुण normal distribution में नहीं, power law में बँटे हैं। Brain में **mirror neuron systems** सबसे ज़्यादा एक्टिवेट होते हैं जब हम high-quality role models के साथ रहते हैं — और ऐसे model statistically दुर्लभ हैं। चाणक्य का "साधवो न सर्वत्र" — Pareto principle का प्राचीन उच्चारण है। 1% सच्चे साधुओं से 99% मानवता का दिशा-निर्धारण होता है।

## 10श्लोक 10

पुत्राश्च विविधैः शीलैर्नियोज्याः सततं बुधैः।
नीतिज्ञाः शीलसम्पन्ना भवन्ति कुलपूजिताः॥

> ⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ — ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰।

### अर्थ

यह श्लोक चाणक्य की **"holistic education"** नीति है — जो आज के "multidisciplinary learning" से 2300 साल पहले की है।

तीन निर्देश : (1) [illegible] — विभिन्न प्रकार के शीलों में, (2) [illegible] — निरन्तर, बिना रुके, (3) [illegible] — बुद्धिमान् पुरुषों द्वारा प्रशिक्षित।

"शील" का अर्थ केवल "अच्छा व्यवहार" नहीं — इसमें कौशल, मूल्य, अनुशासन, art, craft, बुद्धि सब आते हैं। प्राचीन गुरुकुल पद्धति में बालक को 64 कलाएँ (चौसठ कला) सिखायी जाती थीं — संगीत, चित्रकला, नीति, युद्ध-कला, गणित, ज्योतिष, चिकित्सा, सबकुछ।

चाणक्य का दृढ़ मत — बालक को केवल एक विशिष्ट skill में नहीं, अनेक "शीलों" में train करो। फिर वह जीवन की किसी भी परिस्थिति में स्थिर रहेगा। एक कौशल विफल हो, दूसरा सम्भाल लेगा।

"नीतिज्ञ + शीलसम्पन्न = कुलपूजित" — यह formula है। केवल नीति-ज्ञानी होना काफ़ी नहीं (तब वह politician बन जाएगा), केवल शीलवान् होना काफ़ी नहीं (तब वह innocent पर अव्यवहारिक रहेगा)। दोनों का संयोग ही "कुल का गौरव" बनाता है।

चाणक्य ने स्वयं चन्द्रगुप्त को यही training दी — राज्य-नीति, सैन्य-कला, अर्थशास्त्र, धर्म, कूटनीति, मनुष्य-परीक्षा। नौ अलग-अलग fields। चन्द्रगुप्त इसीलिए एक "complete सम्राट" बना।

आज के parents के लिए — अपने बच्चे को केवल coaching class में मत भेजो। उसे संगीत, खेल, गणित, कविता, नेतृत्व, करुणा — सब सिखाओ। एक-dimensional बच्चा एक-dimensional जीवन जिएगा।

### [illegible] आधुनिक उदाहरण

Mumbai के एक doctor-दम्पति ने अपने बेटे को 6-18 साल तक — chess, classical music, swimming, Sanskrit, debate, और communal kitchen service में लगाया। मित्र हँसते — "क्यों इतना बँटा रखा है?" बेटा 22 साल में Harvard MBA + classical singer + chess national + social entrepreneur बना। एक "single track" से अनेक tracks श्रेष्ठ साबित हुए। चाणक्य का "विविधैः शीलैः" प्रमाणित।

### [illegible] मस्तिष्क-दर्शन

**Neural plasticity** research (Michael Merzenich, Norman Doidge) दिखाती है कि अनेक disciplines में train किया गया brain **cross-domain pattern recognition** develop करता है — जो single-domain से कई गुना शक्तिशाली है। संगीत सीखा बच्चा math में भी बेहतर — क्योंकि auditory cortex और parietal cortex के बीच नये neural pathways बनते हैं। चाणक्य का "विविधैः शीलैः" — आज के **"transfer learning"** और **"polymath cognition"** का प्राचीन सिद्धान्त है। बहु-शील बालक का मस्तिष्क structurally अधिक integrated होता है।

## 11श्लोक 11

माता रिपुः पिता शत्रुर्बालो याभ्यां न पाठ्यते।
सभा मध्ये न शोभन्ते हंसमध्ये बको यथा॥

> [illegible]

**अर्थ**

यह श्लोक चाणक्य की सबसे तीखी शिक्षा-नीति है — माता-पिता को "शत्रु" और "वैरी" कहना तीव्र भाषा है, पर उद्देश्य स्पष्ट है।

तर्क — यदि माता-पिता बालक को शिक्षा नहीं देते, तो वे उसके भविष्य का सबसे बड़ा नुक़सान कर रहे हैं — किसी बाहरी शत्रु से भी अधिक। बाहरी शत्रु आपकी सम्पत्ति ले सकता है, पर अशिक्षित parent आपका पूरा भविष्य ले लेते हैं।

"हंसमध्ये बको यथा" — हंसों के बीच बगुले की तरह — यह उपमा सुन्दर है। बगुला और हंस दोनों श्वेत पक्षी हैं, पर हंस के पास नीर-क्षीर विवेक है (दूध से जल अलग कर सकता है), बगुले के पास नहीं। बाहर से दोनों मिलते-जुलते दिखते हैं, पर उपस्थिति में अन्तर स्पष्ट हो जाता है।

अशिक्षित मनुष्य विद्वत्-सभा में बगुले की तरह बैठा होता है — दिखता तो हंस-जैसा है, पर बोलते ही बगुला निकल आता है। न उसकी भाषा परिष्कृत, न उसका ज्ञान, न उसका तर्क। यह वही "अशोभन" है जो चाणक्य कह रहे हैं।

आधुनिक संदर्भ — आज जब parents मानते हैं "बच्चे को पढ़ाने का ज़िम्मा school का है, मेरा नहीं" — यह सबसे बड़ी ग़लती है। School केवल system है। असली शिक्षा घर में — माता-पिता द्वारा प्रश्न पूछना, चर्चा करना, पढ़ने की आदत डालना, सही गुरु ढूँढना — इन सब से होती है।

चाणक्य के अनुसार — एक माता-पिता का सबसे बड़ा पुण्य "ज्ञान-दान" है। और उसका सबसे बड़ा पाप "ज्ञान-निरोध" है — जब वे बच्चे को सीखने से रोकते हैं या सीखने में सहायता नहीं करते।

**[illegible] आधुनिक उदाहरण**

एक रायपुर के व्यापारी ने अपने बेटे को 10वीं के बाद कहा — "अब business में लग जा, college की क्या ज़रूरत ?" बेटा business में 20 साल लगा रहा, ठीक-ठाक कमाया। पर जब global expansion का अवसर आया — international clients के साथ negotiations, MBA-level financial modeling — वह "बगुला" साबित हुआ। हंसों (foreign-educated competitors) के बीच रह नहीं सका। पिता ने "बेटे को business दिया" पर "ज्ञान नहीं दिया।" चाणक्य के अनुसार यह "पिता-शत्रु" का व्यवहार था।

**[illegible] मस्तिष्क-दर्शन**

**Critical periods of brain development** research (Hubel & Wiesel; Patricia Kuhl) से सिद्ध है कि 0-12 वर्ष में **synaptic pruning** और **myelination** की rate जीवन में फिर कभी नहीं आती। इस window में जो भी सीखा गया — वह permanent neural infrastructure बनता है। बाद में सीखना possible है पर 5-10× अधिक प्रयास माँगता है। माता-पिता का बच्चे को न पढ़ाना — एक biological irreversible loss है। चाणक्य के "शत्रु" शब्द का neurological आधार ठोस है।

## 12 श्लोक 12

लालनाद् बहवो दोषाः ताडनाद् बहवो गुणाः।
तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्न तु लालयेत्॥

> *[illegible]-[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]।*

### अर्थ

यह श्लोक चाणक्य की सबसे विवादास्पद नीतियों में से एक है, और आज इसकी सावधानीपूर्वक व्याख्या आवश्यक है। "ताडन" का अर्थ शारीरिक मार नहीं — यह अनुशासन, सीमा, और expectation की कठोरता है।

चाणक्य का तर्क — अति लाड़-प्यार बालक में निम्न दोष पैदा करता है: (a) **entitlement** — सब कुछ मुझे मिलना चाहिए, (b) **weak frustration tolerance** — कठिनाई सहने की क्षमता नहीं, (c) **narcissism** — दूसरों की भावनाओं की अनदेखी, (d) **laziness** — परिश्रम का अभाव।

उल्टी ओर, उचित अनुशासन (ताडन) से: (a) **resilience** — कठिनाई सहने की क्षमता, (b) **responsibility** — अपने कार्यों की ज़िम्मेदारी, (c) **discipline** — स्व-नियन्त्रण, (d) **respect for others** — दूसरों का सम्मान।

आज के पालन-दर्शन में "ताडन" को "structure + consequences" समझना चाहिए। बालक को सीमाएँ दो — homework पूरा न हो तो video game नहीं। झूठ बोले तो साथ चलने का अवसर खोता है। अपने कमरे को साफ़ न रखे तो pocket money घटे। यह "ताडन" है — physical violence नहीं, behavioral consequence।

चाणक्य का गहरा बोध — बालक "love + structure" से सर्वोच्च हो जाता है, "love + no structure" से बिगड़ जाता है, और "structure + no love" से डर-ग्रस्त हो जाता है। उन्होंने "ताडन" पर ज़ोर दिया क्योंकि उनके युग में पहले से "अति लाड़" का problem था।

शिष्य के लिए भी यही — यदि गुरु शिष्य को सब कुछ "हाँ" कहता रहे, शिष्य कभी नहीं सीखेगा। अनुशासन गुरु का प्रेम का रूप है।

### ⍰ आधुनिक उदाहरण

दो families के बेटे एक-ही उम्र के। पहली family — हर माँग पूरी, कोई "नहीं" नहीं, कोई consequence नहीं। बेटा 18 साल में entitled, irresponsible, drug-addiction में। दूसरी family — स्पष्ट rules, अनुपालन पर इनाम, उल्लंघन पर सीमित-समय consequences (no phone, no outing), साथ ही गहरा प्यार। बेटा 18 साल में disciplined, self-reliant, scholarship-winner। दोनों families में फ़र्क़ केवल "ताडन" का था — चाणक्य प्रमाणित।

### ⍰ मस्तिष्क-दर्शन

Stanford का प्रसिद्ध **Marshmallow Test** (Walter Mischel) ने दिखाया कि जो बच्चे delayed gratification (तत्काल इच्छा रोकना) सीखते हैं, वे जीवन में हर metric में बेहतर — academics, health, relationships, income। यह क्षमता **prefrontal cortex** में develop होती है, और इसे केवल **structured limit-setting** से बनता है। अति-लाड़ से **limbic dominance** रह जाता है। चाणक्य का "ताडन" — neurologically prefrontal cortex को strengthen करने की प्राचीन pedagogy है। "ताडन" का अर्थ शारीरिक मार नहीं — limit + consequence है।

## 13 श्लोक 13

श्लोकेन वा तदर्धेन तदर्धार्धाक्षरेण वा।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात् दानाध्ययनकर्मभिः॥

> *⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰, ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰, ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰ — ⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰।*

### अर्थ

यह श्लोक चाणक्य की **"daily compounding"** नीति है — आज की atomic habits theory से 2300 साल पुरानी।

आचार्य कह रहे हैं — दिनभर पढ़ने की क्षमता न हो, पूरा श्लोक न पढ़ सको, आधा भी न पढ़ सको — तो आधे का आधा (एक अक्षर) ही पढ़ो। पर "अवन्ध्य" — व्यर्थ नहीं — दिन रहना चाहिए।

दो स्तम्भ : (1) ⍰⍰⍰ — कुछ देना, चाहे एक रोटी हो, एक मुस्कान हो, एक सहायता हो, (2) ⍰⍰⍰⍰⍰⍰ — कुछ सीखना, चाहे एक शब्द हो, एक विचार हो, एक insight हो।

"दिवसं अवन्ध्यं कुर्यात्" — दिन को बंजर मत होने दो। यह 24-घण्टे शास्त्र-पठन की माँग नहीं है, बल्कि दैनिक minimum-viable contribution है।

क्यों ? चाणक्य का गणित — यदि कोई हर दिन एक श्लोक पढ़े, साल में 365 श्लोक, 10 साल में 3650 श्लोक। कोई शास्त्र भी 3650 श्लोक का नहीं है। यानी 10 साल में आप किसी भी विषय में expert बन सकते हैं — केवल daily 1 श्लोक से।

यही "दान" का गणित — रोज़ एक रुपया दान करें, साल में 365 रुपए, जीवनभर में 25,000 रुपए — आपके अनगिनत पुण्य।

आधुनिक productivity में इसे **"1% better every day" (James Clear)** या **"daily compounding interest" (Charlie Munger)** कहा जाता है। चाणक्य ने यही 23 शताब्दी पहले कहा।

### ⁉ आधुनिक उदाहरण

Delhi के एक IAS aspirant ने 4 साल lage तक रोज़ केवल 30 मिनट पढ़ाई की — "बस एक संविधान का अनुच्छेद" — पर हर दिन। दूसरे aspirants 12-12 घण्टे पढ़ते, फिर एक-दो दिन छुट्टी ले लेते। पहला AIR 47 लाया, दूसरे fail। "अवन्ध्यं दिवसम्" का गणित। 30 मिनट × 1460 दिन = 730 घण्टे = एक पूरे साल का sustained study। Cumulative effect।

### ⁉ मस्तिष्क-दर्शन

**Spaced repetition** और **distributed practice** research दिखाता है कि daily small efforts से neural connections, occasional large efforts से अधिक मज़बूत बनते हैं। **Myelination** (axon पर insulation layer का बनना) — जो किसी skill को "automatic" बनाता है — केवल repeated daily practice से होती है। चाणक्य का "तदर्धार्धाक्षरेण वा" — neurologically, एक अक्षर भी daily करना brain को skill-acquisition mode में रखता है। 0 vs 1 का अन्तर सबसे बड़ा है, 1 vs 100 का नहीं।

## 14 श्लोक 14

कान्तावियोगः स्वजनापमानो ऋणस्य शेषः कुनृपस्य सेवा।
दरिद्रभावो विषमा सभा च विनाग्निमेते प्रदहन्ति कायम्॥

> *⁉ ⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉ ⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉ — ⁉⁉⁉⁉⁉-⁉⁉⁉⁉, ⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉, ⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉, ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉, ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉।*

### अर्थ

यह श्लोक चाणक्य की sharpest psychological observations में से एक है — छह "invisible fires" की पहचान जो मनुष्य को भीतर से जलाती हैं।

छह आग : (1) [illegible] — प्रिय व्यक्ति का वियोग, (2) [illegible] — अपने ही लोगों द्वारा अपमान, (3) [illegible] — बचा हुआ क़र्ज़, (4) [illegible] — दुष्ट राजा/boss की सेवा, (5) [illegible] — दरिद्रता का बोध, (6) [illegible] — विषम/शत्रु-पूर्ण मंडली।

आचार्य का गहरा बोध — ये पीड़ाएँ अग्नि के समान हैं क्योंकि ये निरन्तर हैं, दिखाई नहीं देतीं, और शरीर+मन दोनों को नष्ट करती हैं।

"कान्तावियोग" — प्रिय की दूरी हो (पत्नी/पति/पुत्र/मित्र) — हर सुबह उसका अभाव। यह depression का मूल कारण है। "स्वजनापमान" — अपने भाई-बहन, माता-पिता, पुराने मित्र जो आपको neglect करते हैं — यह self-worth को तोड़ता है।

"ऋणस्य शेष" — सबसे subtle। बहुत लोग loans के बोझ में चुपचाप मरते हैं। यह अग्नि EMIs में जलती है। "कुनृपस्य सेवा" — आज के संदर्भ में दुष्ट manager की नौकरी — daily stress, no recognition, fear।

"दरिद्रभाव" — केवल पैसा कम नहीं, बल्कि **"मैं poor हूँ"** का बोध। यह आपको हर सामाजिक स्थिति में inhibit करता है। "विषमा सभा" — जहाँ आप fit नहीं — हर meeting में outsider feel करना।

चाणक्य का implicit सन्देश — इन छहों से जितनी जल्दी निकल सको, निकलो। अन्यथा शरीर बिना आग जल जाएगा। और यह बहुत वर्ष नहीं ले लेता।

### [illegible] आधुनिक उदाहरण

एक 42-वर्षीय IT manager — पत्नी से अलग (कान्तावियोग), भाई-बहनों से बात नहीं (स्वजनापमान), home loan ₹40 lakh बकाया (ऋणशेष), boss निरन्तर toxic (कुनृपसेवा), पड़ोसियों के मुक़ाबले में आर्थिक hin अनुभव (दरिद्रभाव), office में सब foreign-educated, वह नहीं (विषमा सभा)। 18 महीने में heart attack। डॉक्टर ने कहा — "physically कारण नहीं मिलता।" चाणक्य का "विनाग्निमेते प्रदहन्ति कायम्" का पूर्ण उदाहरण।

### [illegible] मस्तिष्क-दर्शन

**Chronic stress research** (Robert Sapolsky) से सिद्ध है कि निरन्तर psychological stress शरीर में **cortisol** को 24/7 ऊँचा रखता है। यह immune system, cardiovascular system, और even DNA telomeres को नष्ट करता है। छह में से हर एक चाणक्य की "आग" एक अलग chronic stressor है। शोध बताता है कि मनुष्य 2-3 stressors सम्भाल सकता है — 4+ stressors से **allostatic overload** आता है, जो शारीरिक रोग के रूप में प्रकट होता है। चाणक्य का "विनाग्निमेते" — biology में measurable inflammation और cellular damage है।

## 15 श्लोक 15

नदी तीरे च ये वृक्षाः परगेहेषु कामिनी।
मन्त्रिहीनाश्च राजानः शीघ्रं नश्यन्त्यसंशयम्॥

> [illegible]

**अर्थ**

यह श्लोक तीन structural vulnerabilities की पहचान करता है — जहाँ बाहरी रूप से सब ठीक दिखे, पर foundation कमज़ोर है।

तीन उदाहरण : (1) [illegible] — नदी के किनारे का वृक्ष। बाहर से सुन्दर, हरा-भरा। पर हर बाढ़ में जड़ें कमज़ोर होती जाती हैं। एक दिन बहाव में गिर जाता है। (2) [illegible] — पराये घर में रहती स्त्री। सुरक्षा बाहरी, पर हर निर्णय किसी और के अधीन। एक दिन गृहस्वामी बदले, स्थिति बिगड़े। (3) [illegible] — सलाहकार रहित राजा। शक्तिशाली दिखता है, पर हर निर्णय अकेला, हर भूल का परिणाम पूरे राज्य पर।

चाणक्य का गहरा सन्देश — **शक्ति केवल बाहर से नहीं, structure से आती है।** "Foundation strength" "appearance strength" से अधिक महत्वपूर्ण है।

(1) नदी-तीर का वृक्ष: आधुनिक संदर्भ — बहुत compañías जो trend के बहाव में बैठी हैं — startup boom, crypto wave, AI hype — बाहर से tall दिखती हैं, पर एक downturn में सब बह जाती हैं। Sustainable foundation न होने से।

(2) पराये घर की स्त्री : आधुनिक context में — यह "dependent existence" है। चाहे पुरुष हो या स्त्री, जब आप किसी और के "घर" (employer, sponsor, dependent caregiver) में रहते हैं — आपका अस्तित्व उसकी मर्ज़ी पर है। यह vulnerability है।

(3) मन्त्री-हीन राजा : आज का सबसे आम — solopreneur जो किसी की सलाह नहीं लेता, family head जो कभी पूछता नहीं, CEO जो yes-men से घिरा है। यह सब "मन्त्री-हीन राजा" हैं। एक बड़ा भूल पर्याप्त है।

चाणक्य की सलाह — हर शक्ति के लिए, एक स्थिर foundation और अनेक सलाहकार बनाओ। अन्यथा शक्ति अल्पकालिक है।

**[illegible] आधुनिक उदाहरण**

Elizabeth Holmes (Theranos founder) — दुनिया की सबसे कम उम्र की self-made billionaire। पर उसका board पूरा "yes-people" से भरा था — Henry Kissinger, George Shultz जैसे बड़े नाम पर medical knowledge शून्य। वे "मन्त्री" नहीं थे, "ornament" थे। जब company की technology fraud निकली, $9

billion पूरा 18 महीनों में बह गया। नदी-तीर का वृक्ष। चाणक्य का "मन्त्रिहीन राजा" — हर वह founder है जो असली feedback रोकता है।

**🧠 मस्तिष्क-दर्शन**

**Echo chamber** research (Cass Sunstein) दिखाता है कि जब कोई leader केवल agreeing opinions सुनता है, उसके brain में **confirmation bias** और **overconfidence bias** बढ़ते हैं। Decision quality 30-50% गिरती है। उल्टी ओर, "red team" वाले leaders — जिनके पास निरन्तर challenging perspectives हैं — far better decisions लेते हैं। चाणक्य का "मन्त्री-सहित राजा" — आज के **cognitive diversity** research का प्राचीन उच्चारण है। एक अकेला brain — चाहे कितना भी sharp हो — समूह-बुद्धि से कम है।

## 16 श्लोक 16

बलं विद्या च विप्राणां राज्ञां सैन्यं बलं तथा।
बलं वित्तं च वैश्यानां शूद्राणां च कनिष्ठिका॥

> *[illegible]*

**अर्थ**

यह श्लोक चाणक्य की **"functional varna theory"** है — जिसे आज जन्म-आधारित caste से समझना अनुचित है। चाणक्य के समय और शास्त्रीय अर्थ में, "वर्ण" व्यवसाय/कर्म-आधारित functional category थे, जन्म-आधारित नहीं।

आज इस श्लोक को इस तरह पढ़ें: मनुष्य के चार functional types हैं, और हर type की शक्ति अलग है। यह discriminatory नहीं — यह classification है।

चार functional categories: (1) [illegible] *(scholar/teacher type)* — बल विद्या/ज्ञान। (2) [illegible] *(administrator/leader type)* — बल सैन्य/संगठित बल। (3) [illegible] *(entrepreneur/trader type)* — बल वित्त/संसाधन। (4) [illegible] *(service/skilled-labour type)* — बल कनिष्ठिका, अर्थात् सेवा-क्षमता।

चाणक्य का गहरा सन्देश — हर व्यक्ति को अपनी natural functional category पहचाननी चाहिए, और उसी "बल" को develop करना चाहिए। यदि कोई scholar-type business में जाए — असफल। trader-type जो scholarship में जाए — असफल। अपनी प्रकृति के विरुद्ध जाना मूर्खता है।

आधुनिक संदर्भ — आज की "career counseling" इसी सिद्धान्त पर है। हर बच्चे की aptitude अलग है। किसी

का brain analytical (scholar), किसी का leadership-oriented (administrator), किसी का opportunity-seeking (entrepreneur), किसी का skill-execution (specialist)।

चाणक्य की चेतावनी — चारों "बल" समान-मूल्य हैं। शूद्र की सेवा-शक्ति विप्र की विद्या से कम नहीं। प्रत्येक की समाज में अलग आवश्यकता है। बल पहचानो, develop करो, सम्मान करो।

### ? आधुनिक उदाहरण

एक engineering college में 4 best friends — Arjun (genius scholar, IIT topper), Rohit (natural leader, college GS), Vikas (started 3 ventures from hostel room), Mohan (best craftsman, fixed everyone's bikes)। 15 साल बाद — Arjun professor at Stanford (विद्या-बल), Rohit IPS officer (सैन्य-बल), Vikas founder of ₹500 crore startup (वित्त-बल), Mohan owns largest service garage chain in central India (कनिष्ठिका-बल)। हर अपने प्राकृतिक "वर्ण" में पनपा। चाणक्य प्रमाणित।

### ? मस्तिष्क-दर्शन

**Multiple Intelligences theory** (Howard Gardner) ने सिद्ध किया कि मानवीय बुद्धि एक नहीं — कम से कम 8 अलग प्रकार की हैं: linguistic, logical-mathematical, spatial, musical, bodily-kinesthetic, interpersonal, intrapersonal, naturalistic। हर व्यक्ति में कुछ dominant हैं। Brain में अलग cortical areas इन्हें support करते हैं। चाणक्य के चार "बल" — Gardner के 8 intelligences के functional clusters हैं। अपनी dominant intelligence पहचानना — एक neurologically-grounded life strategy है, social hierarchy नहीं।

## 17श्लोक 17

निर्धनं पुरुषं वेश्या प्रजाभग्नं नृपं त्यजेत्।
खगा वीतफलं वृक्षं भुक्ता अभ्यागता गृहम्॥

> *? ???????? ???????? ???, ?????? ????? ????? ??, ?????? ??-??? ?????? ??, ?????? ????? ?? ???? ???? ?? — ?????????-?????? ??? ?????????-????????? ?? ???????? ?????? ????? ????।*

### अर्थ

यह चाणक्य का सबसे तीखा observation है — चार उपमाओं द्वारा वे human nature की transactional सच्चाई दिखाते हैं।

चार उदाहरण : (1) *???????? ???????? ?? ????????? ??* — सम्बन्ध पैसे पर था, पैसा गया, सम्बन्ध गया। (2) *?????? ????? ????? ?? ????????? ??* — सम्बन्ध सुरक्षा पर था, राजा हार गया, प्रजा बदल गयी। (3)

[illegible] — सम्बन्ध भोजन पर था, भोजन समाप्त, पक्षी उड़ गया। (4) [illegible] — सम्बन्ध सेवा पर था, सेवा हुई, चला गया।

चाणक्य कोई नैतिक निंदा नहीं कर रहे — वे केवल pattern recognition कर रहे हैं। यह मानवीय व्यवहार का सत्य है।

निष्कर्ष implicit है — **"transaction-based relationships" से "value-based relationships" को अलग पहचानो।** यदि कोई आपके आसपास केवल आपके धन, पद, या उपयोगिता के कारण है — उसका रहना अस्थायी है। जिस दिन उपयोगिता समाप्त, सम्बन्ध समाप्त।

विडम्बना यह है कि अधिकांश लोग transaction और love में अन्तर नहीं देख पाते। जब वे शक्ति की चोटी पर होते हैं — सब "मित्र" लगते हैं। जब गिरते हैं — पता चलता है कि 95% transactional थे।

चाणक्य का व्यवहारिक सूत्र — अपने आसपास के लोगों को मानसिक रूप से दो श्रेणियों में रखो: (a) जो आपकी उपयोगिता समाप्त होने पर भी रहेंगे, (b) जो उपयोगिता तक रहेंगे। दूसरी श्रेणी से अधिक अपेक्षा मत रखो। पहली श्रेणी को अमूल्य समझो।

यह श्लोक "कान्ताविियोग" से अलग है — वहाँ प्रिय का जाना पीड़ा है। यहाँ "transactional का जाना" — पीड़ा नहीं, स्पष्टता है।

### [illegible] आधुनिक उदाहरण

Anil Ambani at peak — 2008 में दुनिया के 6th richest। Yacht parties, Bollywood stars, world leaders — सब उनके आसपास। 2020 में bankruptcy declared। कोई star, कोई CEO, कोई politician phone नहीं उठाता। केवल माता और भाई (विवादास्पद रूप से Mukesh) ने स्थायी सम्बन्ध रखा। चाणक्य के चार उदाहरण literally सच साबित हुए। पाठ — जब सर्वोच्च पर हों, transactional और value-based को पहचानो। दूसरी श्रेणी छोटी हो, पर वही असली है।

### [illegible] मस्तिष्क-दर्शन

**Evolutionary psychology** कहती है कि मनुष्य का brain "reciprocal altruism" के लिए evolved है — हम सहायता तब करते हैं जब return मिलने की संभावना हो। यह "tit-for-tat" pattern primates में 50 million वर्ष पुराना है। केवल एक तरह का सम्बन्ध इस pattern को override करता है — **kin-selection / deep attachment** — जहाँ oxytocin और vasopressin pathways activate होते हैं। चाणक्य की चार उपमाएँ — biological reality की हैं। और "अपवाद" — माँ का प्रेम, गहरी मित्रता — biological exceptions हैं, सामान्य नहीं।

## 18श्लोक 18

गृहीत्वा दक्षिणां विप्रास्त्यजन्ति यजमानकम्।
प्राप्तविद्या गुरुं शिष्या दग्धारण्यं मृगास्तथा॥

> [illegible]

**अर्थ**

पिछले श्लोक 17 की निरन्तरता में, चाणक्य तीन और transactional pattern दिखाते हैं — पर यहाँ एक नया angle है। ये केवल "स्वार्थ" नहीं — यह "task completion" के बाद का natural separation है।

तीन उदाहरण : (1) [illegible] — यज्ञ पूरा, दक्षिणा मिली, ब्राह्मण घर लौटे। यह transactional तो है, पर हानिकारक नहीं — यह "service completed" pattern है। (2) [illegible] — शिक्षा पूरी, शिष्य अपने जीवन में आगे। यह natural progression है। (3) [illegible] — यह survival है, स्वार्थ नहीं।

यह श्लोक श्लोक 17 से subtle रूप से अलग है। वहाँ "उपयोगिता समाप्ति पर त्याग" था (transactional)। यहाँ "stage completion पर त्याग" है — जो natural है।

आचार्य का गहरा सन्देश — **हर सम्बन्ध की एक "season" होती है**। कुछ lifelong हैं (माता-पिता), कुछ stage-specific हैं (गुरु-शिष्य, सहयोगी, neighbours)। Stage-specific सम्बन्धों में जब stage समाप्त हो जाए — separation natural है, hurtful नहीं।

आधुनिक संदर्भ — आपके college के roommates, पहली job के colleagues, neighborhood के मित्र — ये सब "season relationships" हैं। एक phase के लिए important, फिर alumni-network बन जाते हैं। उनसे permanent attachment की अपेक्षा रखना दुख का कारण है।

चाणक्य की निःस्वार्थ recognition — **सब relationships permanent नहीं होते, और होना चाहिए भी नहीं**। हर season का अपना sweetness है।

### [illegible] आधुनिक उदाहरण

Mumbai के एक IT professional Akash के 4 best friends थे college के दिनों में। Graduation के बाद सब अलग शहरों में गए। 5 साल बाद Akash को दुख — "अब वे call नहीं करते।" फिर एक mentor ने समझाया — "वह college season था। उसमें वे amazing थे। अब उनकी नयी season है, अपने नए लोग। तुम्हारा भी नया season — नये लोग जुड़े। पुराने को त्यागा नहीं, season बदला।" Akash ने accept किया। चाणक्य के "प्राप्तविद्या" का बोध।

### [illegible] मस्तिष्क-दर्शन

**Dunbar's number** research (Robin Dunbar) से सिद्ध है कि मानवीय brain केवल ~150 active relationships maintain कर सकता है। इसलिए हर नये relationship के लिए कोई पुराना peripheral होना biological necessity है। यह "rejection" नहीं — neural capacity है। साथ ही, **life-stage transitions** में brain के **default mode network** में reshuffling होती है — पुराने patterns का प्रासंगिकता गिरती है, नये उभरते हैं। चाणक्य के "natural separation" — neurologically inevitable हैं, स्वार्थ-जन्य नहीं।

## 19श्लोक 19

दुराचारी दुष्टदृष्टिर्दुरावासी च दुर्जनः।
यन्मैत्री क्रियते पुंसां स तु शीघ्रं विनश्यति॥

> *[illegible]*

### अर्थ

यह श्लोक चाणक्य की **"association warning"** है — आप जिनके साथ रहते हैं, वैसे ही बनते हैं।

तीन लक्षण दुर्जन के : (1) *[illegible]* — बुरा आचरण, anti-social behavior, (2) *[illegible]* — बुरी दृष्टि, हर चीज़ में दोष देखने की प्रवृत्ति या dishonest intentions, (3) *[illegible]* — बुरे स्थान में रहने वाला, criminals/drugs/illegal areas।

चाणक्य कहते हैं — ऐसे व्यक्ति की केवल "मित्रता करने वाला" भी "शीघ्र विनश्यति" — जल्दी नष्ट हो जाता है। यह hyperbole नहीं — observation है।

क्यों ? कारण neurological-social हैं: (a) **Behavior contagion** — आप जिनके साथ time spend करते हैं, उनकी आदतें अनजाने में अपनाते हैं। (b) **Social proof** — दुर्जन के साथ रहने से समाज आपको भी "वैसा" मानने लगता है। (c) **Opportunity cost** — दुर्जन के साथ बिताया समय, सज्जन के साथ नहीं बिताया जा सकता।

"शीघ्र" शब्द महत्वपूर्ण है। यह नष्ट होना लम्बे समय में नहीं — जल्दी होता है। एक toxic friend, एक toxic relationship 5-10 साल में जीवन तबाह कर सकती है।

आधुनिक संदर्भ — आपका friend circle = आपका future। Jim Rohn का प्रसिद्ध वचन — "You are the average of the 5 people you spend the most time with।" चाणक्य का यह श्लोक 2300 साल पहले की वही चेतावनी है।

व्यवहारिक सूत्र — हर 6-12 महीने अपने closest 5 लोगों की audit करो। यदि एक भी दुर्जन है — distance बढ़ाओ। उनके साथ कम समय, सज्जन के साथ अधिक — यही survival strategy है।

### ⁉ आधुनिक उदाहरण

एक 17-साल का लड़का — पढ़ाई में बढ़िया, अच्छे परिवार से। नये school में 4 लड़कों के साथ मित्रता बनी जो drugs, petty crime में थे। 6 महीने में marks गिरे, 1 साल में addiction, 2 साल में arrest। माता-पिता हतप्रभ — "हमारा बच्चा तो ठीक था!" पर चाणक्य पहले ही कह चुके थे — "यन्मैत्री क्रियते पुंसां स तु शीघ्रं विनश्यति।" Just 24 months से सम्पूर्ण विनाश।

### ⁉ मस्तिष्क-दर्शन

**Social contagion** research (Christakis & Fowler, "Connected") ने सिद्ध किया है कि obesity, smoking, happiness, even suicide — सब socially contagious हैं। आपके friend के friend का behavior भी आपको प्रभावित करता है (3 degrees of influence)। Brain में **mirror neurons** automatically nearby behaviors को copy करते हैं — conscious choice नहीं। चाणक्य का "मैत्री क्रियते...शीघ्रं विनश्यति" — neurologically-validated phenomenon है। आप जिनके साथ हैं, उनकी neural patterns आपके brain में imprint होती हैं — चाहो या न चाहो।

## 20श्लोक 20

समाने शोभते प्रीतिः राज्ञि सेवा च शोभते।
वाणिज्यं व्यवहारेषु स्त्री दिव्या शोभते गृहे॥

> *⁉ ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉, ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉, ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉, ⁉⁉ ⁉⁉ ⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉ — ⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉।*

### अर्थ

द्वितीय अध्याय का समापन-श्लोक चाणक्य की **"right thing in right place"** नीति है।

चार सूत्र: (1) *⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉* — मित्रता समान status वालों में शोभा देती है। उच्च के साथ अधीनता बनती है, निम्न के साथ संरक्षण। समानता में ही असली मित्रता। (2) *⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉* — सेवा (employment) सक्षम authority के साथ शोभा देती है। निर्बल authority की सेवा शोभा नहीं। (3) *⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉* — व्यापार business transactions में शोभा देता है, personal relationships में नहीं। (4) *⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉* — सद्गुणी जीवन-साथी घर में शोभा देता है (आज इसे gender-neutral पढ़ें — सद्गुणी partner घर की शोभा है)।

आचार्य का गहरा सन्देश — हर चीज़ का अपना "context" है। उसी context में वह श्रेष्ठ है। Context बदलो — वही चीज़ अनुचित हो जाती है।

उदाहरण: (a) मित्रता boss से नहीं — वहाँ professional respect। (b) Romance office में नहीं — वहाँ work focus। (c) Business in friendship — relationship बिगाड़ता है। (d) Family in office — favoritism बनती है।

चाणक्य का सूत्र आज के **"role-based behavior"** सिद्धान्त है। हर भूमिका का अपना protocol है। एक ही व्यक्ति — पिता घर में, बॉस office में, ग्राहक shop में, नागरिक society में — हर role में उचित behavior अलग।

व्यवहारिक — अपने रिश्तों को label करो: friend, mentor, colleague, business partner, family। हर label का अपना boundary है। जब boundaries crossing होती है — "व्यवहारेषु वाणिज्यं स्त्री दिव्या गृहे" — सब अव्यवस्थित हो जाता है।

यह श्लोक चाणक्य की पूरी द्वितीय अध्याय का सार है — मित्र-शत्रु पहचान, गुप्तता, सन्तान-शिक्षा, संगति-चयन — सब "right thing in right place" का विस्तार है।

### ? आधुनिक उदाहरण

Delhi के एक businessman ने अपने सबसे करीबी मित्र से ₹50 लाख का business deal किया — "ये तो भाई समान है, क्या contract बनाऊँ ?" 18 महीने बाद deal में dispute, दोनों side पैसा डूबा, और 20 साल की मित्रता समाप्त। यदि उन्होंने चाणक्य का सूत्र माना होता — "व्यवहारेषु वाणिज्यम्" — business को friendship से separate रखा होता, proper contract बनाया होता — तो दोनों रिश्ते बच जाते: business handled professionally, friendship अप्रभावित।

### ? मस्तिष्क-दर्शन

**Role theory** (Erving Goffman, "The Presentation of Self") से सिद्ध है कि मनुष्य का brain अलग-अलग roles के लिए अलग-अलग neural circuits use करता है। एक ही व्यक्ति office में अलग, घर में अलग, friends में अलग — यह "fragmentation" नहीं, "context-appropriate cognition" है। Brain का **prefrontal cortex** इन switches को manage करता है। जब roles confuse होते हैं — business ↔ friendship, romance ↔ professional — cognitive load बढ़ता है, decisions corrupt होते हैं। चाणक्य का "shobhate" — हर role-context में अनुकूल behavior — आज की neurological reality है।


**? Interactive Reader में पढ़ें**

VastuGuruji Chanakya Reader में हर श्लोक के साथ — Tabs (अर्थ/उदाहरण/? Brain), Bookmarks, Notes, Audio, और AI-powered "चाणक्य से पूछें" feature।

**Visit:**
https://vastuguruji.in/blog/chanakya-neeti/chanakya-neeti-adhyay-2-mitra-shatru-aur-buddhi/?utm_source=pdf&utm_medium=qr&utm_campaign=chanakya_pdf

**WhatsApp:** +91 97704 40000 · **Email:** support@vastuguruji.in

? Scan to open